ग्रामीण मुस्लिम समुदाय में परिवार नियोजन से सम्बन्धित समस्याऐं

डा0 (श्रीमती) उर्मिला रावत,
असिस्टेंट प्रोफेसर
डी0ए0वी0(पी0जी0) कालेज
देहरादून

भारत की जनसंख्या वृद्वि को धार्मिक आधार पर तुलनात्मक दृश्टि से देखा जाय तो मुस्लिम समुदाय की जनसंख्या काफी तेजी से बढ़ रही है। मुस्लिमों की अधिकांष आबादी गांवों में निवास करती है जो अंध विष्वास, गरीबी, अषिक्षा से प्रभावित है। ग्रामीण मुस्लिमों का उच्च षिक्षा का स्तर अति न्यून है, इसी कारण स्वास्थ्य, षिक्षा, परियोजन सम्बन्धी जानकारी कम होती है और कुछ धार्मिक प्रवृति के कारण भी परिवार नियोजन को नही अपनाते है। इस कारण मुस्लिमों की जनसंख्या बढ़ती जा रही है। दूसरी समस्या है, परिवार नियोजन का सामाजिक आधार पर विरोध करते है। इनका मानना है कि गर्भ निरोध सामग्रियों के उपलब्ध होने के कारण लड़कियां अपने षील को कायम नही रख पायेंगी। षादी से पहले इन साधनों का उपयोग करके यौन सम्बन्ध आम बात हो जायेगी, वेष्यावृति बढेगी, यौन सबसे बडा व्यापार बन जायेगा, विवाह की पवित्रता नश्ट हो जायेगी। इस रूढ़ीवादी विचार धारा के कारण योजनाऐं सफल नही होती है। इस वजह से सेक्स की जानकारी का अभाव हो जाता है, क्योंकि सेक्स जैसे विशय पर कोई भी दम्पत्ति बात करना पंसद नही करता है, लज्जा, सकोंच करते हैं, जिससे वे संभोग और सन्तानोत्पति के प्रति अस्वस्थ दृश्टिकोण अपना लेते है और परिवार नियोजन के नियत्रंणों के उपायों को अपनाना कठिन हो जाता है। जब पति पत्नी के विचार निरोध के उपायों में एक जैसे नही होते है तो ऐसे दम्पत्ति परिवार नियोजन के वे तरीके अपनाते है जो सफल नही होते है। क्योंकि सेक्स सम्बन्धी बातें करने में षर्म महसूस करते है। सेक्स के प्रति इस प्रकार का अस्वस्थ दृश्टिकोण परिवार नियोजन की असफलता का मुख्य कारण है। ग्रामीण परिवारों में तो परिवार नियोजन, सेक्स के बारे में बात करना भी पंसद नही करते है। मुस्लिम परिवारों में तो इस बारे में बात करना भी गन्दा मानते है। इनके साथ–साथ परिवार नियोजन से सम्बन्धित अन्य समस्याऐं सरकार की तरफ से भी है।

1. जैसे कार्यकर्ताओं में प्रषिक्षण तथा कुषलता की कमी होती है, इसकी कमी के कारण मुस्लिम समुदाय तो इन पर विष्वास ही नही करता है और उनके बीच गलत धारणायें बन जाती है। कभी–कभी ये लोग जोर जबरदस्ती भी करते हैं। जिसके कारण जनता इन पर अविष्वास करने लगती है। फलतः लोग परिवार नियोजन न करने की प्रवृत्ति रखने लगते है।
2. यह भी एक बहुत बडी समस्या है कि पर्याप्त साधनों की उपलब्धता नही होती है– जैसे गोलियां, जेली क्रीम, झागदार गोलियां, डायाफ्राम एंव निरोध, आई.यू.डी. आदि फ्री में ज्यादा नही मिल पाती है। कभी–कभी इन प्रयोगों से बैचेनी या कोई अन्य परेषानी होने लगती है। यह देखा गया है कि जिन गांवों में मुस्लिम जनसंख्या ज्यादा है वहां ये साधन लोकप्रियता हासिल नही कर पाये है, वैसे

गांव वालों में थोड़ा इनके प्रति डर भी बैठ जाता है, क्योंकि अषिक्षा व अज्ञानता के कारण सरकार परिवार नियोजन के लिए जितने भी प्रयास करती है, 100 प्रतिषत सफल नही हो पा रहे हैं।

आवासीय समस्या भी इसके आगे आती है क्योंकि स्वास्थ्य केन्द्रों पर जो डा0, मिडवाइक, कर्मचारी होते है उनके रहने की उचित व्यवस्था नही हो पाती है, जिससे लोगों को कभी–कभी ये कर्मचारी मिल नही पाते है और इस परिवार नियोजन सम्बन्धी जानकारी सरलता से नही मिल पाती है।

परिवार नियोजन सम्बन्धी विज्ञापन कुछ ऐसे क्षेत्र है, जहां लोग न तो देख पाते है और कुछ देखकर भी समझ नही पाते है। इन क्षेत्रों में सरकार को विषेश प्रयास करने चाहिये, जिससे इन क्षेत्रों के निवासियों को परिवार नियोजन की जानकारी मिल सके। एक समस्या स्वास्थ्य कर्मचारियों का तबादला भी है, क्योंकि जब तक लोगों से सम्पर्क रखने की कोषिष करने लगते है तब तक उनका तबादला हो जाता है।

दूर के क्षेत्रों में जहां आने जाने की समस्याऐं हैं, वहां स्वास्थ्य कर्मचारी रोज–2 नही जाते है। पहले से ही वे वांछित स्थान पर रहना चाहते है। इस वजह से लोगों के साथ तारतम्य नही बन पाता है और परिवार नियोजन सफल नही हो पाता है। सबसे ज्यादा गम्भीर बात यह है कि स्वास्थ्य केन्द्रों पर कार्यरत कर्मचारी अपना काम सही ढंग से नही करते है। कागजों पर ही कार्यवाही हो जाती है। अधिकतर देखने में आया है कि जब नसबन्दी षिविर लगता है तो कितने ही नसबन्दी असफल हो जाते है। जब घरों में जाकार दवाइंयां बांटनी होती है तो ये जिम्मेदारी पूरी तरह से नही निभाते है। कभी–कभी ऐसा भी होता है कि सरकार की तरफ ये परिवार नियोजन के साधन मुक्त में दिये जाते है। परन्तु ये लोग कभी–कभी इन लोगों से पैसे भी ले लेते है। दूसरी तरफ सरकार का वजट कम ही रहता है तभी तो इन केन्द्रों में आवष्यक उपकरण नही मिल पाते हैं तथा दवा तथा निरोध के साधनों का अभाव रहता है, तब लोग बाजार से खरीदते है तथा लोगों की यह भी षिकायत रहती है कि अच्छी क्वालिटी के परिवार नियोजन के साधन नही होते है। आर्थिक कमी के कारण परिवार नियोजन सम्बन्धी सरकार का परिवार नियोजन सम्बन्धी कार्य कागजों में तो सफल हो जाता है, परन्तु वास्तविक स्थिति देखी जाय तो यह प्रोग्राम पूरी तरह आज भी सफल नही हो पाया है।

भारत जैसे विषाल देष के लिए जहॉ षिक्षा, सड़क, परिवहन का अभाव है, तो परिवार नियोजन को जन–जन तक पहुॅचाने के लिए लोगों को जागरूक करने के लिए व्यापक एवं प्रभावपूर्ण विज्ञापनों की आवष्यकता है। आज भी ग्रामीण क्षेत्रों में लोग परिवार नियोजन की आवष्यकता उसके महत्व तथा गर्भ निरोधक साधनों, उनके प्रयोगों से अनभिज्ञ हैं। यह ज्यादा प्रसार किया जाय तो ग्रामीण मुस्लिम समुदाय में परिवार नियोजन के कार्यक्रमों को अधिक सफलता मिल सकती है।

उपरोक्त सभी समस्याऐं परिवार नियोजन कार्यक्रमों को सफल बनाने में बाधक है, परन्तु एक बहुत बड़ी समस्या इस कार्यक्रम की सफलता के लिए जिम्मेदार है वो है जन सहयोग की समस्या दूर दराज के ग्रामीण क्षेत्रों में रूढ़िवादिता, अज्ञानता, अषिता होने के कारण परिवार नियोजन के प्रति उत्साह कम रहता है तथा ग्रामीण मुस्लिम समुदाय के लोग कहते है कि ये कार्यक्रम सारे सरकारी है। जनता का कार्यक्रम नही है इस कारण हमें सही लगेगा तो ही इन साधनों का प्रयोग करेंगे। फिर अज्ञानता के कारण इनका यह भी मानना है कि बच्चे अल्ला की देन है जब अल्ला पैदा कर रहा है तो खाने पीने की व्यवस्था भी अल्ला ही की कृपा से हो ही जायेगी। जब तक ऐसी सोच होगी तो मुस्लिम समुदाय में परिवार नियोजन का कार्यक्रम सफल नही हो

सकता है। इसलिए सरकार को कड़े कानून बनाने चाहिए, जिससे मुस्लिम समुदाय भी इस बारे में गम्भीरता से सोचे, तभी सरकार को सफलता मिल सकती है और भारत की जनसंख्या बढ़ने पर अंकुष लग सकता है और जिस देष की जनसंख्या कम होती है तो उसका चहुमुखी विकास बडी ही षीघ्रता से होता है।

संदर्भ ग्रंथ

1- जवेद जीमल (1996) 'इस्लाम और परिवार नियोजन' मिषन पब्लिकेषन सहारनपुर।

2- चन्दना आर0सी0 (2002) 'ए जियोग्राफी ऑफ पापुलेषन' कल्याणी पब्लिसर्ष नई दिल्ली।

3- ओम प्रकाष (1973) 'पापुलेषन जियोग्राफी आफ उत्तरप्रदेष' अनपब्लिषड पी0एच0डी0 थीसीज, वाराणासी'

4- पाटनी आर0एल0रस्तोगी (2003) 'सामाजिक जनांकीकि, संजीव प्रकाषन

5- पाठक पी0डी0 ''भारतीय षिक्षा और उनकी समस्याऐं''

6- कुरूक्षेत्र मासिक पत्रिका सितम्बर 2007